ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

समकालीन भारतीय चित्रकला में अंजोली ईला मेनन का योगदान

Contribution of Anjoli Ella Menon to Contemporary Indian Painting

Paper Submission: 12/08/2020, Date of Acceptance: 25/08/2020, Date of Publication: 26/08/2020

विजेयता चारण
शोधार्थी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

इतिहास साक्षी है कि कलाओं में चित्रकला का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना कि मनुष्य के विकास का इतिहास। मानव ने जब कुदरत की गोद में आंख खोली तब से ही वह अपनी मूक भावनाओं को अपनी तूलिका द्वारा टेढ़ी–मेढ़ी रेखाओं के माध्यम से गुफाओं और शिलाओं की दीवारों पर अंकित कर अभिव्यक्ति की है।

विश्व के कला के इतिहास में पिछली सदी अर्थात् बीसवीं शती सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही है। हजारों सालों के कला के विकासक्रम में जितनी भी उपलब्धियां हैं वह पिछले सौ सालों की गतिविधियों के समक्ष लघु ही मानी जाएगी।वस्तुत: बीसवीं सदी चित्रकला में आंदोलनों, बदलावों और नित नवीन प्रवृत्तियों के उदय और अस्त से भरी रही है।

आज इक्कीसवीं शती में पहुंचकर पिछली सदी का विश्लेषण संभव भी है और आवश्यक भी है।

History testifies that the history of painting in arts is as ancient as the history of human development. Ever since man opened his eyes in the lap of nature, he has expressed his silent feelings through his zigzag through curved lines on the walls of caves and rocks.

The last century ie the twentieth century has been the most important in the history of art of the world. All the achievements in the development of art of thousands of years will be considered as miniature in front of the activities of the last hundred years. The twentieth century has been filled with the rise and fall of movements, changes and new trends in painting.

Today, in the twenty-first century, the analysis of the last century is possible and necessary.

मुख्य शब्द : आधुनिक भारतीय कला,समकालीन भारतीय चित्रकला, समकालीन भारतीय चित्रकार, अंजोली ईला मेनन ।

Modern Indian Art, Contemporary Indian Painting, Contemporary Indian Painter, Anjoli Ella Menon.

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में अंग्रेज शासकों के विक्टोरियाकालीन विदेशी चित्रकला का भारत में बीजारोपण करने की अथक चेष्टा की, परन्तु यह कला वृक्ष विकसित न हो सका। यदि संस्कृति का समन्वय संभव न था तो विद्रोह निश्चित था। भारतीय कला ने इस भावना के नवजागरण का रूप ग्रहण किया और पुनः कला–विकास की नवीन आशाओं का सूत्रपात हुआ।'[1]

भारतीयों ने अपना सांस्कृतिक विकास करने के लिए जिन साधनों को अपनाया, उनमें चित्रकला भी एक साधन थी।

भारतीय चित्रकला में समकालीन के नए अर्थ को समझने के लिए हमें समकालीन शब्द पर विचार करना होगा।

'एक ही समय में रहने या होने वाला'[2]

पहले जिस कला संदर्भ के लिए आधुनिक शब्द का व्यवहार होता था। कला में प्रचलित विभिन्न शैलियों तथा प्रवृतियों के संदर्भ में समकालीनता और आधुनिकता समानार्थी शब्द है।

इसके बारे में विवेचना करते हुए प्राण नाथ मागो लिखते हैं .'यह न तो भौगोलिक हैए न इसका अर्थ मशीनीकरण हैएन यह फैशन है, यह भौतिकवाद भी

नहीं है और न ही यह सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धांत है। वर्तमान में जिन चीजों का अस्तित्व है, वह तो उसे भी पूरी तरह सीमाबद्ध नहीं कर पाती है। 3

प्राचीन काल से ही महिला चित्रकार कलाकर्म करती रही हैं तो आधुनिक काल में क्यों पीछे रहे। भारतीय समकालीन चित्रकला का अवलोकन किया जाए तो हमारे मस्तिष्क में कुछ प्रतिनिधि महिला चित्रकारों के नाम आते हैं। इन महिला चित्रकारों में अमृता शेरगिल, मृणालिनी मुखर्जी, अर्पिता सिंह, अपर्णा कौर, जयश्री बर्मन, मनु पारेख, गोगी सरोज पाल और अंजोली ईला मेनन प्रमुख है।

जब भारत कला में स्वयं को फिर से खोज रहा था, पश्चिम प्रभाव को दूर कर अपनी कला की ओर वापसी के आंदोलन चला रहे थे, तो भारतीय कला को एक महिला चित्रकार की कला के अवलोकन का सुनहरा अवसर मिला वे थी अमृता शेरगिल जो भले ही विदेश में पढ़ी पर भारतीयों से ज्यादा भारतीय थी।

महिला चित्रकारों की इस धारा को आगे बढ़ाती समकालीन कला की नामी चित्रकार है–अंजोली ईला मेनन जो अमृता शेरगिल से काफी प्रभावित रही, आप अमृता जी की कला को देखकर ही बड़ी हुई।

दुर्भाग्य से अमृता शेरगिल की मृत्यु बहुत कम उम्र में हो गई थी पर दोनों के पैलेट और दृश्य रूपकों में बहुत सी समानताएं मिलती हैं जिन पर गौर करने की जरूरत है। दोनों की शुरुआती ट्रेनिंग इकोल दे ब्यूएक्स आर्ट्स पेरिस में हुई थी और दोनों ही समकालीन भारतीय कला में दुर्लभ कलाप्रवीण तथा मजबूत व्यक्तित्व वाले कलाकारों के अग्रगामी बन कर उभरे हैं।

'मेनन और शेरगिल के चित्रों में कई बातें समान हैं, जैसे कि मानव आकृतियां–चाहे वे उदासी भरे एकांत में हों अथवा किसी समूह का हिस्सा हों. जिस तरह वे जटिल संरचना का एक अभिन्न हिस्सा बन जाती हैं इस पर चिंतन–मनन होना चाहिए।'[4]

अंजलि ईला मेनन का जन्म 1940 में पश्चिमी बंगाल में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा लवडेल स्कूल नीलगिरी हिल्स तमिलनाडू में हुई थी। आपने 12 वर्ष की आयु से कला निर्मिती शुरू की। आप लवडेल जिस स्कूल में पढ़ी वो एक सैनिक स्कूल था जो नियम और कायदों वाला था पर राहत देने वाला थाए कला का कालांश। कला विभाग में आपके कला शिक्षक थे सुशील मुखर्जी जहां आप जलतरंग करते हुए तेलतरंग का काम भी सीखीं। आपकी पढ़ाई जे.जे.स्कूल ऑफ आर्ट मुंबई में हुई। इसके बाद आपने अंग्रेजी साहित्य से दिल्ली से स्नातक डिग्री हासिल की।

अंजोली ईला मेनन की कला रहस्यमय प्रतीत होती है। उनकी पेंटिंग मुख्य रूप से तेल रंग से मेसोनाइट बोर्ड पर बनी होती हैए व पारदर्शिता एवं रहस्यमय के लिए जानी जाती है।

अनियंत्रित उल्लास के प्रारम्भिक कलाकर्म के बाद अंजोली ईला मेनन की पेंटिंग्स में समय के साथ–साथ परिपक्वता, गहनता, स्थिरता के साथ–साथ व्यथा तथा विश्वसनीयता भी देखी जा सकती है। इन्होंने अन्य चित्रकारों से अलग मार्ग अपनाया और एक लंबा सफर तय किया।

इतने सालों में अंजोली ईला मेनन की चित्रकारी एक खास निखार के साथ उभरी है जिसकी अपनी अलग पहचान भी है और समकालीन भारतीय कला में इसकी टक्कर का कोई दूसरा नहीं दिखाई देता।

'मेनन के काम को एक खास विजुअल टैक्सचर से भर देने वाली यह खासियत उनके चित्रों में मिलती है और दिलचस्प बात यह है कि यह खासियत एक बहुत बारीक से नकार या नेवेशन से उभरती है। उनके चित्र अक्सर एक जादूई तथा सपनिली दुनिया की तरफ इशारा करते हैं।'[5]

अंजोली ईला मेनन की पेंटिंग्स हार्डबोर्ड पर उकेरी हुई सपनों की रहस्यमयी अनुकृतियां प्रतीत होती है। वे चित्रांकन के लिए हार्डबोर्ड को ही प्राथमिकता देती है।

उनकी पेंटिंग्स में जहां एक ओर आम जन की भावनाओं पर बड़ी सहानुभूति से देवत्व आरोपण है वहीं दूसरी ओर उस पेंटिंग्स का भाव सरल और भावपूर्ण निश्चलता को अभिव्यक्त करती है।

एक साक्षात्कार में वे अपनी पेंटिंग्स में खाली घर में खाली कुर्सियों को उकेरे जाने के आशय को इस तरह व्यक्त करती हैं .'खाली कुर्सियां इसलिए क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जीवन में गतिशील है तथा इस प्रक्रिया में वह स्वयं का कुछ न कुछ अंश पीछे छोड़ता है। यह मेरा 28 वां घर है जिसमें शादी के बाद आई हूं लगातार स्थानांतरण के लिए व्यक्ति को खुद को तैयार करना होता है और जो चीजें पीछे छूट जाती हैं उन्हें विस्मृत भी करना होता है"।[6]

आपके चित्रों का अहम किरदार महिलाएं हैं। आपने अपनी पति के चित्र भी बनाएं हैं क्योंकि चेहरा लंबी दाढ़ी के साथ आइकॉन जैसा लगता है।

आपके चित्रों के अन्य विषय है–जैसे पूजारी मैडोना न्यूडस इत्यादि । 1970 में मेनन का काम कथात्मक हो गया व चित्रों के रूपाआकार में पूर्व और पश्चिम का मिश्रण जैसे बकरी, कुत्ते, कोवे और छिपकलियां अक्सर चित्रित हुई है।

एक निर्मम दृष्टिकोण से देखने पर हम पाते हैं कि कलाकार ने बेमेल विषय–वस्तु को अगल बगल बनाया है जो हाईरोनिमस बोस्च तथा प्री राफेलाइट्स के असर की ओर संकेत करता है। युवा आधी उघड़ी और पारदर्शी कपड़ों में लिपटी स्त्रियां, जानवर, पक्षी, सरीसृप और देवदूत जैसी पुरुष आकृतियां–सब ऐसे पौराणिक जगत से आये हैं जो चित्रकार के अपने अवचेतन की उपज हैं।'[7]

परन्तु अंत में इसका परिणाम एक ऐसी शैली थी जिसकी विशेषता थी उनकी व्यक्तिगत पसंद तथा जो बातें दूसरों की निगाह में तार्किक या राजनीतिक रूप से सही या महत्वपूर्ण थीं। उनको अकस्मात लोप कर देता है।

1990 में आपने कम्प्यूटर का प्रयोग कर चित्र रचना की। कम्प्यूटर की छवियों को ओवरलैप किया। इस सिलसिले में आपने अपनी एक फेजेज की पेंटिंग से एक छवि की रचना की इस सीरीज को म्यूटेशन नाम दिया।

'मेनन अलग–अलग रंगों को इस्तेमाल करती है। परत दर परत पारदर्शी रंगों को सख्त सतह पर लगाती है। उससे जो छवि बनती है उसे वो कहती है– मूड्स और प्रेस्पैक्टिव'[8]

इंडिया टुडे को दिए एक और साक्षात्कार में इनके चित्रों के बारे में उल्लेख हैं कि'इनके व्यक्ति चित्र अपनी खाली आंखों के बाहर तकते हैं। लगभग विचित्रता की श्रेणी में आने वाले परंतु मोहने वाले रोमांसवाद में मढ़े मेनन के चित्र य व्यक्ति चित्र खाली खिड़कियों के पीछे विचार मग्न बैठे हैं जहां कुछ भी हिलता डुलता नहीं।'[9]

इनके चित्रों की तकनीक पर जिन प्रमुख चित्रकार का प्रभाव पड़ा उसका रेखांकन करते हुए गायत्री सिन्हा लिखती है .'जब वो पेरिस में थी तो मेक्सिकन चित्रकार फ्रैंसिस्को में उन्हें सतहों के रंग लगाने से सतह दर सतह परिचित करवाया जिसका प्रभाव उनकी बाद की पेंटिंग में परिलक्षित हुआ है।'[10]

अंजुली इला मेनन पेरिस में एक ग्रहणशील युवा चित्रकार थीं और जितना संभव था उन्होंने आत्मसात किया। सामान्यतः उन्हें आधुनिक आंदोलनों और पिकासों ब्राक और लेगर जैसे कलाकारों से प्रभावित होना चाहिए था, परन्तु उन्होंने 'स्कूल ऑफ पेरिस' की अपेक्षा अनाम रोमन पेंटिंग्स से अधिक प्रेरणा ली है। परिणामस्वरूप अभी भी उनके काम में कठोरता की वह क्वालिटी है जिसे उन्हें भली–भांति समझने वाली उनकी समलोचक मंजुला पद्मनाभन ने एक 'विशिष्ट ऑकवर्ड ग्रेस' कहा है।

यही नहीं भारतीय मिथकों का उन्होंने अपने तरीके से चित्रित करना चाहा है।

'गणेश जी को दुर्गा की गोद में नीले रंग के हाथी के बच्चे के रूप में दर्शाया है और लक्ष्मी जी के सिर को कमल जैसा दर्शाया है साथ ही सरस्वती को सिर्फ ज्ञान की देवी नहीं अपितु आधुनिक विज्ञान की प्रणेता के रूप में चित्रित कर अपनी मौलिक दृष्टि का परिचय दिया है।'[11]

कला का हृदय के साथ कितना तादात्म्य है इसका उल्लेख करते हुए एक पत्रिका 'वरवे 'के लेख में अंजोली इला मेनन के योगदान को इस तरह रेखांकित किया गया है .'कैसे कारपेट प्रोजेक्ट आर्ट और हर्ट को करीब लाता है। भारत की अग्रीम चित्रकार अंजोली इला मेनन की कलाकृतियों को करीने में पुनर्जीवित किया है।'[12]

अंजोली ईला मेनन के कार्य की कला समय और स्थान तक पहुंच रखती है। जो भारत में काम करती है और बहुत से कलाकारों से प्रभावित होती है।

एक पत्रिका को दिए गए साक्षात्कार में वे अपनी कला कर्म की व्याख्या करते हुए कहती हैं कि'हमेशा से ही मुझे घुम्मकड़ और रहस्यमय कहा गया है। मेरे पेरिस प्रवास के दौरान मैंने इतिहास में गोता लगाया और शुरुआती ईसाई कला की सादगी को अपनाया बजाय क्यूरेटिव आर्ट के जो मेरे आगे चलने वाले अपना रहे थे। दोनों ही रंग योजना और अलंकरण बाइजेंटाइन आर्ट के एक तार से जोड़ते हैं जो कि भारतीय जड़ों से सीधे सादे सम्मुख स्थिति के आकार आज तक मुझे प्रभावित करते हैं।'[13]

अध्ययन का उद्देश्य

यूजीसी गाइडलाइंस के अनुसार पीएचडी जमा कराते समयविषय से संबंधितरीसर्च पेपर के प्रकाशन की अनिवार्यता के तहत है।

निष्कर्ष

अंजोली ईला मेनन तकनीक से काफी हद तक दूरी बनाए रखती है उनका मानना है कि वर्तमान में इंटरनेट के संजाल की उपलब्धि के चलते हमारे पास बहुत सारी तस्वीरें है और इनकी अधिकता से हमारा मस्तिष्क भ्रमित हो सकता है। अतः इनका यह भी मानना है कि एक चित्रकार को अपनी आंखों के सामने खाली कैनवास रखना चाहिए ताकि उस पर अपनी कल्पना के रंग उकेर सके। अपनी प्रेरणा से उसमें नए आकारों को रंग दे सकें।

उनके जीवन का यह काफी ज्ञानवर्धक समय है क्योंकि यह हमें उनके काम में एक साथ आने वाले विभिन्न स्तरीय उद्विपकों के बारे में बताता है। उनकी उदास आकृतियों की धार्मिक कठोरता उनके पैलेट में जरा से फर्क से उत्साहप्रद हो जाती है–काले–धूसर काही और भूरे रंग चटक सफेद रंग के साथ मिल जाते हैं। उनका यह औरों से बिल्कुल भिन्न रंग संयोजन सूचित करता है कि उनके आगे के काम का विकास अनवरत जारी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भारतीय चित्रकला का इतिहास – अविनाश बहादुर वर्मा, पृष्ठ संख्या – 270, प्रकाश बुक डिपो,बरेली, 2005*
2. *बृहत हिंदी कोश रू संपादक – कालिका प्रसाद, राज वल्लभ सहाय, मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या 1195, ज्ञान मंडल लिमिटेड – वाराणसी, 2011*
3. *प्राण नाथ मागो रू भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य – पृष्ठ संख्या 2 ,नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दिल्ली, 2006*
4. *इसाना मूर्ति–अंजुली ईला मेनन ,पृष्ठ संख्या – 6,वढेरा आर्ट गैलेरी दिल्ली – 2018*
5. *वही – पृष्ठ संख्या – 8*
6. *Neville tuli & The Flamed Mosaic & Indian contemporary Painting, page- 318, Heart in association with Mapin publishing private ltd singapore ,1997*
7. *इसाना मूर्ति– अंजुली इला मेनन, पृष्ठ संख्या – 23, वढ़ेरा आर्ट गैलरी दिल्ली 2018*
8. *इंडिया टुडे , साक्षात्कार पृष्ठ 27,नवम्बर 15,1978*
9. *इंडिया टुडे, साक्षात्कार ,पृष्ठ 76, मार्च 15,2015*
10. *gayayri sinha , Expression and contemporary women artist's of India, page 84,marg publications mumbai 1996*
11. *Isana murti ,Indira dayal&Anjolie Ela Menon : paintings in private collections, page 37, Ravi dayal publisher , delhi,1995*
12. *Verve- The Spirit of today's women, Oct 23,2018*
13. *Art News & news art.com/artask. Jun 2017*